

सलोक ॥

तजहु सिआनप सुरि जनहु  
सिमरहु हरि हरि राइ ॥  
एक आस हरि मनि रखहु  
नानक दूखु भरमु भउ  
जाइ ॥१॥

असटपदी ॥

मानुख की टेक ब्रिथी सभ जानु ॥  
देवन कउ एकै भगवानु ॥  
जिस कै दीऐ रहै अघाइ ॥  
बहुरि न त्रिसना लागै आइ ॥  
मारै राखै एको आपि ॥  
मानुख कै किछु नाही हाथि ॥  
तिस का हुकमु बूझि सुखु होइ ॥  
तिस का नामु रखु कंठि परोइ ॥  
सिमरि सिमरि सिमरि प्रभु सोइ ॥  
नानक बिघनु न लागै कोइ  
॥१॥

उसतति मन महि करि निरंकार ॥  
करि मन मेरे सति बिउहार ॥  
निरमल रसना अंम्रितु पीउ ॥  
सदा सुहेला करि लेहि जीउ ॥  
नैनहु पेखु ठाकुर का रंगु ॥  
साधसंगि बिनसै सभ संगु ॥  
चरन चलउ मारगि गोबिंद ॥  
मिटहि पाप जपीऐ हरि बिंद ॥  
कर हरि करम स्रवनि हरि कथा ॥  
हरि दरगह नानक ऊजल मथा  
॥२॥

बडभागी ते जन जग माहि ॥  
सदा सदा हरि के गुन गाहि ॥  
राम नाम जो करहि बीचार ॥  
से धनवंत गनी संसार ॥  
मनि तनि मुखि बोलहि हरि मुखी ॥  
सदा सदा जानहु ते सुखी ॥  
एको एकु एकु पछानै ॥  
इत उत की ओहु सोझी जानै ॥  
नाम संगि जिस का मनु मानिआ ॥  
नानक तिनहि निरंजनु जानिआ  
॥३॥

गुर प्रसादि आपन आपु सुझै ॥  
तिस की जानहु तिसना बुझै ॥  
साधसंगि हरि हरि जसु कहत ॥  
सरब रोग ते ओहु हरि जनु रहत ॥  
अनदिनु कीरतनु केवल बख्यानु ॥  
ग्रिहसत महि सोई निरबानु ॥  
एक ऊपरि जिसु जन की आसा ॥  
तिस की कटीऐ जम की फासा ॥  
पारब्रह्म की जिसु मनि भूख ॥  
नानक तिसहि न लागहि दूख ॥

॥४॥

जिस कउ हरि प्रभु मनि चिति आवै ॥

सो संतु सुहेला नही डुलावै ॥

जिसु प्रभु अपुना किरपा करै ॥

सो सेवकु कहु किस ते डरै ॥

जैसा सा तैसा द्रिसटाइआ ॥

अपुने कारज महि आपि समाइआ ॥

सोधत सोधत सोधत सीझिआ ॥

गुर प्रसादि ततु सभु बूझिआ ॥

जब देखउ तब सभु किछु मूलु ॥

नानक सो सूखमु सोई असथूलु

॥५॥

नह किछु जनमै नह किछु मरै ॥  
आपन चलितु आप ही करै ॥  
आवनु जावनु द्रिसटि अनद्रिसटि ॥  
आगिआकारी धारी सभ स्रिसटि ॥  
आपे आपि सगल महि आपि ॥  
अनिक जुगति रचि थापि उथापि ॥  
अबिनासी नाही किछु खंड ॥  
धारण धारि रहिओ ब्रह्मंड ॥  
अलख अभेव पुरख परताप ॥  
आपि जपाए त नानक जाप  
॥६॥

जिन प्रभु जाता सु सोभावंत ॥  
सगल संसारु उधरै तिन मंत ॥  
प्रभ के सेवक सगल उधारन ॥  
प्रभ के सेवक दूख बिसारन ॥  
आपे मेलि लगै किरपाल ॥  
गुर का सबदु जपि भए निहाल ॥  
उन की सेवा सोई लागै ॥  
जिस नो क्रिपा करहि बडभागै ॥  
नामु जपत पावहि बिस्रामु ॥  
नानक तिन पुरख कउ ऊतम करि मानु  
॥७॥



जो किछु करै सु प्रभ कै रंगि ॥  
सदा सदा बसै हरि संगि ॥  
सहज सुभाइ होवै सो होइ ॥  
करणैहारु पछाणै सोइ ॥  
प्रभ का कीआ जन मीठ लगाना ॥  
जैसा सा तैसा द्रिसटाना ॥  
जिस ते उपजे तिसु माहि समाए ॥  
ओइ सुख निधान उनहू बनि आए ॥  
आपस कउ आपि दीनो मानु ॥  
नानक प्रभ जनु एको जानु  
॥८॥१४॥